National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 110-111

विवशता के घेरे में सुषमा

डॉ. नीना शर्मा

का. आचार्या, हिन्दी विभाग, आणंद आर्ट्स कोलेज, आणंद, गुजरात, भारत।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में महिला कथाकार में उषा प्रियंवदा का नाम विशिष्ट साहित्यकार के रूप में लिया जाता है | उनके साहित्य में आधुनिक जीवन की विडंबना, संत्रास, अकेलापन स्पष्ट रूप से देखा जाता है | अपनी शिक्षा भारत में पूरी करने के बाद उषा जी फूलब्राईट स्कालरशिप पर अमेरिका गयी जहाँ उन्होंने ब्लूमिंगटन इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरेट स्टडी की | विदेश में रहकर भी भारतीय भूमि की समस्याओं का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है | उनके कई कहानी संग्रह है जैसे (१) जिन्दगी और गुलाब के फूल (२) कितना बड़ा झूठ (३) एक कोई दूसरा (४) शून्य तथा अन्य रचनाएँ आदि उपन्यासों में – पचपन खंभे लाल दीवारे, रुकेगी नहीं राधिका, शेष यात्रा, अन्तर्वशी आदि प्रमुख है |

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी के विविध रूप देखने को मिलते है | 'केगी नहीं राधिका', और "शेष यात्रा" विदेश की पृष्ठभूमि है | तो पचपन खंभे लाल दिवारे उपन्यास भारतीय पृष्ठभूमि का उपन्यास है | मोहभंग की कथा है | जहाँ एक स्त्री की आकांक्षा, इच्छा, वेदना, संवेदना दिखाई देती है |

उनकी विविध समस्याओ को इस उपन्यास में दर्शाया है | "पचपन खंभे लाल दिवारे उपन्यास" उनका पहला उपन्यास है | सुषमा के पिता अपाहिज है और बड़ी बेटी होने के कारण पूरे परिवार की जिम्मे दारी सुषमा पर आ जाती है | सुषमा कोलेज में प्रिन्सीपल है और सभी को सुषमा से आशाएँ है कही कही ऐसा लगता है की माता पिता नहीं चाहते कि सुषमा का विवाह हो जाए वरना घर की जिम्मे दारी कौन सम्हालेगा | और अचानक नील उसके जीवन में आता है | और सुषमा के जीवन के कोरे कागज पर पुनः कई इबारते लिखी जाने लगती है | लेकिन धीरे धीरे पारिवारिक जिम्मे दारी और समाज का दबाव उस नील को छोड़ने पर विवश कर देता है |

"यह उपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के यथार्थ और उसके नव विकसित जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति को उजागर करता है | नवीन परिस्थितियों से निर्मित स्थितियों में जाने अनजाने नारी को जो भीतर ही भीतर घुटना पड़ता है | उसकी अन्नत्त्यर्था का बड़ा सूक्ष्म मार्मिक चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में उपलब्ध होता है |"१ सुषमा अपने आपको हमेशा अकेला अनुभव करती है जब मिनाक्षी का विवाह निश्चित हो जाता है तो मिनाक्षी चाहती है कि वह भी विवाह कर ले लेकिन सुषमा को अपने सामने सारे दरवाजे बन्द दिखाई देते है | "जिसके चारो ओर द्वार बंद हो वह क्या करे ? उसी कारागार में रहता रहे, सीखचो से आती धूप ओर मद्धिम प्रकाश के बल पर सांसे लेता रहे |"२ सुषमा को इस बात का बेहद दर्द है कि उसकी अपनी माँ भी उसका दुःख नहीं समझ पाती है | माँ को लगता है इतना अच्छा पगार कपड़े गहने सबकुछ तो है यही सुख है | और वह अपनी छोटी बेटी के लिए रिश्ता ढूंढने लगती है | परिवार द्वारा सुषमा का शोषण होता रहता है | और वह चाह कर भी न तो विरोध करती है और नहीं इन परिस्थितियों से दूर जाती है | "परिवार में होने वाले अर्थ-शोषण की प्रवृत्ति से सुषमा तंग आ जाती है | नील नामक पुरुष उसकी मुक्ति के लिए कोशिश करता है, पर सुषमा उन्ही पचपन खंभों और लाल दीवारों में केद रहने के लिए विवश हो जाती है | अर्थ के खातिर जानबुझकर परिवार वाले सुषमा की जिंदगी में बिखराव् लाते है और उसी स्थिति में रहना उसकी नियति बन जाति है |"३ और सुषमा भी अपनी नियति को बदलना नहीं चाहती उपन्यास में मिस शास्त्री का चरित्र है उसके व्यवहार को देखकर कभी कभी सुषमा को लगने लगता है कि वह भी तो मिस शास्त्री जैसी नहीं हो जाएगी | उसका जीवन भी पचपन खंभों की तरह स्थिर है | "सुषमा कोलेज के पचपन खंभों की तरह स्थिर-अचल रहना स्वीकार करती है | तदनंतर संभवित हर सुख को नकारती है | दर्द को जीवन पर केवल जिन्दा लाश ढ़ोने के अतिरिक्त वह भविष्यकालीन जीवन में कुछ भी नहीं करना चाहती क्योंकि उसमे प्रेम की ललक है किंतु परिस्थिति से विवश होने के कारण जिन्दगी के प्रति कोई आकर्षण नहीं |"४ २१ वी सदी में जाते भारत में नारी सशक्तिकरण, नारी स्वंतंत्रता का बहुत ढोल पिटा जाता है लेकिन क्या एक स्त्री का नौकरी करना और उसकी आर्थिक स्वंतंत्रता ही उसकी स्वंतंत्रता का मापदंड है वह परिवार, समाज, द्वारा बार बार छली जाती है | सुषमा की इच्छाओ पर पैर रखकर माँ यह एलान करती है कि उसे फिझूल खर्चे कम कर देने चाहिए | वह अंदर ही अंदर टूट जाती है | परिवार का प्रश्न आते ही वह बार बार टूट जाती है निल उसे समझाता भी है कि उसका परिवार उसका अनड्यूएडवांटेज ले रहा है लेकिन सुषमा खुद अपने निर्णय के प्रति अस्थिर है | नील बहुत समझाता है लेकिन सुषमा को उसका परिवार अधिक महत्वपूर्ण लगता है | "ठीक है- तुम यही रहो इन पचपन खंभों में बन्दी होकर में तुम्हारे बहकावे में आ गया था में सोचने लगा था कि में तुम्हारे लिए सब कुछ बन गया हूँ | मैंने अब जाना कि तुम्हारे पास खुबसूरत चेहरे के अलावा एक व्यावहारिक बुद्धि और अपना भला समझनेवाला दिमाग भी है |"५ सुषमा के जीवन में घुटन संत्रास अकेलेपन के साथ साथ विवशता भी है जिसमे वह घुटकर रह जाती है | परिवार की आर्थिक विवशता उसे कोलेज के पचपन खंभों की तरह स्थिर कर देती है वह चाहते हुए भी अपने जीवन को रंगों से नहीं भर पाती है | नील के आने से उसके जीवन में सरझता, उल्लास, उमंग, उत्साह आ जाता है | लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ उसकी सारी आकांक्षाओं को कुचल कर रख देता है | यह अवश्य है कि उपन्यास का

अंत स्वीकार्य नहीं लगता लेकिन भारतीय नारी के संस्कारो कही कही हावी होते दिखाई देते है | उसे लगता है कि उसके विवाह से बड़ी समस्या उसका परिवार है | वह कहती है | "विवाह करके परिवार को निराधार छोड़ देना मेरे लिए असंभव है |"६ उसकी विडंबना तो तब बड़ी लगती है जब मिनाक्षी का विवाह निश्चित हो जाता है तो वह उससे कहती है कि "पैतालीस साल की आयु में भी में एक कुत्ता या बिल्ली पाल लुंगी उसे सीने से लगा लुंगी.....आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर कोलेज में आओ तब भी तुम मुझे यही पाओगे, कोलेज के पचपन खंभों की तरह अचल स्थिर....."७ सुषमा अपनी नियति को स्वीकार कर लेती है | उसे लगने लगता है कि अब उसके जीवन में कोई अंतर नहीं आने वाला क्योंकि परिवार भी सुषमा की इच्छाओ को समझना नहीं चाहता उनके लिए परिवार और उनकी अपनी विवशता और इन सबके साथ सुषमा की जिम्मेदारी यही सबकुछ समाप्त हो जाता है | वह जानती है कि वह नील के साथ खुश रह सकती है उसके जीवन में फिर से रंग भर सकते है लेकिन ऐसा नहीं कर पाती है | परिवार का बोझ उसकी खुशियों को समाप्त कर देता है | "उषाप्रियंवदा के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक विषमता का बोझ ढोती नारियाँ चित्रित है | मध्यमवर्गीय नारी परिवार का बोझ स्वयं ढोने के लिए प्रस्तुत है | वह भी त्रस्त है आर्थिक वैमनस्य की मार से | सुषमा की विवशता उनका परिवार और परिवार का उत्तरदायित्व है |"८ और यह सच है की परिवार भी उन्हें इस प्रकार तैयार करता है कि यह उनकी जिम्मेदारी है | और जिम्मेदारी का बोझ सुषमा को ही तोड़ कर रख देता है | और नील हमेशा हमेशा के लिए चला जाता है उपन्यास का अंत बहुत करुण है सुषमा जाने के लिए टेक्सी भी मंगाती है लेकिन अंततः वह हार कर हताश होकर वही रुक जाती है |

संदर्भ

1. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास - पारुकांत देसाई-पेज.नं.-१३०
2. पचपन खंभे लाल दिवारे –उषाप्रियंवदा- पेज.नं.-३६
3. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तिन नारी जीवन मूल्य- डॉ.छायादेवी घोरपड़े- पेज.नं.-३४५
4. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में युग बोध –डॉ.जय श्री बहाटे- पेज.नं.-९१
5. पचपन खंभे लाल दिवारे –उषाप्रियंवदा- पेज.नं.-१०५
6. वही- पेज.नं.-४७
7. वही - पेज.नं.-१०३
8. स्वतंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों में युग बोध – डॉ.लाल साहब सिंह- पेज.नं.-२७९